Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

काव्य सौष्टव और बिहारी सतसई

Dr. Hemlata Sharma*

Assistant Professor, J. C. College, Assandh, Karnal, Haryana

----------X----------

रीति काल के प्रसिद्ध कवि बिहारी का काव्य अपनी अनेक विशेषताओं के कारण चर्चाका विषय बना रहा है। रीतिकाल के अनेक कवियों ने केंवल श्रृगार को ही रस राजस्व सिद्ध करने का प्रयास किया है। जबकि बिहारी ने श्रृंगार को शिखर तक पहुचाने के साथ साथ भक्ति और नीति का भी सुनदर काव्यानुभूतियों को व्यक्त किया है। बिहारी का एक ही ग्रंथ ''बिहारी सतसई उनकी महत कीर्ति का आधार है। आचार्य शुक्ल के अनुसार यह बात साहित्य, क्षेत्र के इस तथ्य की स्पष्ट घोषणा कर रही है कि किसी कवि या यश उसकी रचनाओं के परिणाम से नहीं होता गुण के हिसाब से होता है।

बिहारी की सतसई में श्रृंगार, भक्ति नीति का काव्यनुभूति प्रकृति चित्रण की व्यापकता, विभिन्न ज्ञान के विषयों को सरलता पूर्वक काव्य के योग्य बनाकर प्रभावी ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया है। बिहारी के काव्य की विशेषताओं के भाव व कला पक्ष दोनों सबल दिखाई देता है।

बिहारी के काव्य का भाव पक्ष

बिहारी के काव्य की रससिद्धि

हिन्दी साहित्य के रीति काल के महाकवि बिहारी श्रृंगारिक कवि थे। इसी कारण उनकी रससिद्धि के कई आधार कवि थे परन्तु इन आधारों के विवेचन से पहले रससिद्धि के अर्थ को समझा लेना आवश्यक है।

रससिद्धि का अर्थ

रससिद्धि शब्द रस हो सिद्ध शब्दों से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है। काव्य में रस की सिद्धि प्राप्त होना। सामान्तः काव्य में रस की सिद्धि तब प्राप्त होती है। जब कवि रस के सभी अंगों व अंगो से जुड़े उपकरणों और उपादानों का समग्रता के साथ ग्रहण करता हैं बिहारी के काव्य में रससिद्धि को स्थान पद देखा जा सकता है।

इस आधार पर रससिद्धि कवि वह है जो अपने काव्य में रस के अवयवों, उपादानों और उनसे जुड़े हुऐ सदर्भो को रसात्मक शैली में प्रस्तुत करता है। वह रससिद्धि कवि होता है। और उस का काव्य रससिद्धता का पर्याय बना जाता है। बिहारी एक रससिद्ध कवि है। उनके काव्य में रस सिद्धता का प्रमाणिकता करने वाले उपादनों मे श्रृंगार रस के दोनों पक्षों का निरूपण, नायक नायिकाओं की स्थिति का विवेचन, हाव भाव और अनुभवों का चित्रण किया है। इसलिए बिहरी को रससिद्ध कवी कहा जाता है।

बिहारी सतसई में प्रधान रस श्रृंगार है कुछ शोध कर्ता विद्वानों ने बिहारी सतसई के 712 दोहों मे से लगभग 600 दोहे श्रृंगार रस से परिपूर्ण बताये है। परन्तु इस संबंध में विवाद है। श्रृंगार रस की प्रधानता के साथ साथ बिहारी सतसई में भक्ति रस अन्योक्तियों और नीति सें संबंधित दोहे भी मिल जाते है। परन्तु प्रधानता श्रृंगार रस की ही है।

श्रृंगार रस

श्रृंगार रस सभी रसों में से श्रेष्ट रस है तथा हिन्दी, साहित्य में इसे रसरात की उपाधि प्रदान है श्रृंगार शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है श्रृग का अर्थ है। कामोद्रेक अर्थात् काम का फुट पड़ना। आर का अर्थ है। लाने वाला अथार्त् जो कामोद्रेक लाता है। या पैदा करता है। इस प्रकार श्रृंगार रस वह रस है। जिसमें नायक नायिकाओं के मिलन अथवा संयोग से उत्पन्न सुख या वियोग के कारण होने वाले कष्ट वर्णन होता है। उसे श्रृंगार रस कहतें है। श्रृंगार रस के दो प्रकार होते है।

1. संयोग श्रृगांर 2. वियोग श्रृंगार।

रीतिकाल की रीतिसिद्ध बिहारी एक श्रृंगारिक कवि है। तथा इन्होने अपनी कृति बिहारी सतसतई के अन्तर्गत श्रृंगार के दोनो पक्षों का बहुत ही मार्मिकता के साथ वर्णन किया है।

संयोग श्रृंगार

कविवर बिहारी ने अपने काव्य में संयोग श्रृंगार का सूक्ष्मता एवं कुशलता के साथ वर्णन किया है। इनके काव्य में संयोग श्रृंगार दो रूपों में सामने आता है। एक तो नायिका नायक के रूप सौन्दर्य का वर्णन और दूसरा क्रीड़ा वर्णन। बिहारी ने संयोग श्रृंगार के अन्तर्गत इन दोनो अवस्थाओं का बहुत ही मार्मिकता के साथ वर्णन किया है।

रूप वर्णन

बिहारी सतसई के अर्न्गत बिहारी ने नायक नायिकाओं के रूप सौन्दर्य का वर्णन बहुत ही आकर्षक ढंग से किया है। इस रूप वर्णन के अन्तर्गत कही तो नायिक आलम्बन बनही हूई है तो कहीं नायक आलम्बन के रूप में सामने आता है बिहारी ने नायिका के नखशिख का स्वतंत्र रूपस से वर्णन करते हुए सौन्दर्य के जो चित्र खीचें है। वे बहुत ही आकर्षक लगते हैं एक दोहा दृष्टव्य है।

''अंग अंग छवि की लपट उपअथ जाति उछेह।

खरी पातरिउ तऊ लगै भरी सी देह।।''

क्रीड़ा वर्णन

बिहारी ने अपनी सतसई में संयोग श्रृंगार के अन्तर्गत रति क्रीड़ओं के वर्णन को भी महत्व दिया है। क्रीड़ा वर्णनप के अन्तर्गत बिहारी ने नायक नायिका के मिलन, आंलिगन और विपरीत रति आदि का वर्णन बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है बिहारी के अपने काव्य में विपरीत रति का जो वर्णन किया। उससे संबंधित दोहा दृष्टव्य ळे

भक्ति रस

हिन्दी साहित्य के नौ रसों के साथ साथ एक भक्ति रस को भी स्वीाकरा गया है, परन्तु कुछ आलोचकों इसे रस की श्रेणी में नहीं रखते हैं। लेकिन आज भक्ति को रस मानने में कोई भी आपत्ति नहीं। निश्चय ही भक्ति काव्य में भावना का जो विस्तार भारतीय साहित्य में मिलता है। उसकों देखते हुए भक्ति को रस ने स्वीकारना वस्तुस्थिति की उपेक्षा करना है।

भाव व्यंजना और बिहारी सतसई

बिहारी ने अपने काव्य में कुछ भाव व्यंजनाओं की भी अभिव्यक्ति की है। जिसमें हाव वर्णन और अनुभाव वर्णन प्रमुख है।

हाव वर्णन

आलम्ब रूप में नायिका की चेष्टाओं और मुद्रओं को हाव कहते है। अर्थात् नायिका की स्वाभाविक श्रृंगार चेष्टाएं हाव कहलाती है। हाव को संस्कृत में अंलकार भी कहा जाता है। सामान्यतः हाव तीन प्रकार के होते है।

1. अगंज
2. अयत्नज
3. यतन्ज आथवा स्वभावज।

अगंज भाव

अगंज भाव तीन प्रकार के होते है। भाव, हाव और हेला। 'निर्विकार चित्र में प्रथम बार समुत्यिम काम–विचार का भाव कहते है। इसकें अन्तर्गत किसी भी इच्छा का प्रकाशन नहीं होता है।

''और ओप कनीकनकन गनी धनी सिरताज।

मनी धनी के नेह की बनी छनी पट लाज।''

जब विकार अभिलाषा पूर्वक प्रकट होता है तो उसे हाव कहते है।

''देख्यौ अनदेख्यौ कियै अंगु अगु सबै दिखाई।

पैठति सी तन मै सकुचि बैठी, चितै लजाई।।''

जब चेष्टाएं इतनी बढ़ जाती है कि उसमें लज्जा भाव बहुत कम रह जाता है और साधारण व्यक्ति भी प्रेम को लक्षित कर देता है उसे हेला कहते है।

''चलतु धरू धर धर तऊ धरी न घर ठहराई।

समुझि उन्ही घर कौ चलै भूलि उन्ही घर जाई।।''

अयत्नज हाव

इसके लिए किसी भी प्रकार के प्रयत्न की आवश्यकता नहीं होती है। ये सात प्रकार के होते है। शोभाख कान्ति दीप्ति, माधुर्य, प्रगत्भता, औदार्य और धर्या। बिहारी सतसई के अन्तर्गत अयत्नज के सातों प्रकार के उदाहरण मिल जाते है।

बिहारी और प्रकृति चित्रण

पुरातन काल से ही मनुष्य व प्रकृति का गहरा संबंध रहा है। कहा जये तो प्रकृति मनुष्य की सहचरी रही है अर्थात वह मनुष्य के सुख, दुख के दोनो में उसके साथ रही है। अभिप्राय यह है कि आदिकाल से ही प्रकृति मानव से जुड़ी हुई है। मनुष्य का कोई भी कार्यकलाप प्रकृति से अलग नहीं है। प्रकृति और मानव का यह संबंध इतना प्रगाढ़ है कि कवि कलाकारों ने भी उसे स्वीकार किया है। आदि मानव ने जब नेत्रोमलीन किया तो धरती ने अपनी दुलार भरी गोद में ले लिया, मृदू समीर ने झुलाया, बीचियों ने लोरियाँ गाई, अरूण ने अनुराग–रंजित आलेक दिया और इन्दुर श्मिदों ने चार चुम्बन से उसे गदगद कर दिया। मानव और प्रकृति का यह यहचर्य चिन्तन हो गया। इस शाश्वत संबंध के परिवेश में ही वह कभी उसके अभिनव श्रृंगार पर मुग्धहोता कभी उसकी क्षुब्ध भंगिमा से भत होता, कभी नत जानु हो उससे उपदेश और आदेश प्राप्त करता, कभी अपने प्रिय के अंग–प्रत्यंगों का उसमें सादृश्य ढूँढता, कभी अपने प्रिय के हर्ष, विषादको प्रकट कर हृदय–भार को हल्का करता और कभी प्रकृति के अन्तर में प्रवेश कर सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमसता का अनुभव करता। मानव का प्रकृति के प्रति यह अनेकांगी संबंध सर्वदेशीय और सर्वयुगीन हो गया। युग–युग में देश और काल की सीमा ने उसके दृष्टिकोण की दिशा भले ही परिवर्तित कर ही हो, किन्तु उसका प्रवाह अवरूद्ध कभी नही हुआ।''

बिहारी सतसई में शब्द विधान : यह एक वास्तविकता है कि भाषा का निमार्ण शब्दों से ही होता है और ये शब्द कई प्रकार के हो सकते है। बिहारी सतसई के अन्तर्गत बिहारी ने जो शब्द विधान अपनाया है वह भी एक जैसा नही है। बिहारी सतसई में मुख्य शब्दावली चाहे 'ब्रज' भाषा की है परन्तु ब्रजभाषा के साथ ही इनकी रचना में अन्य भाषाओं संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अरबीफारसी आदि के शब्द देखने को मिलते है। बिहारी की रचना में प्रयुक्त शब्द–विधान प्रभावी इसीलिए है कि उन्होने शब्द की आत्मा को पहचाना है। बिहारी ने अपनी कृति बिहारी सतसई में जिन भाषाओं के शब्दावली का प्रयोग किया है विचेन दृष्टिगोचर है।

ब्रजभाषा के शब्द : बिहारी की रचना बिहारी सतसई में प्रमुखता ब्रजभाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। ये शब्द दो प्रकार के शब्द है तो दूसरी तरफ ग्रामीण बोलचाल के श्चाब्द है। उदाहरण के लिए जीवन, रहयौ, परयौ, चुनरी, दिठोना, आँखि, भौन, छवि–छाँक, सलोनीचितवति, मुसुकान, लुवै, लजौही, मँहदी, जमुहार, पलनु, बिजुरी, हियौ, बतियाँ आदि साहित्यिक ब्रज भाषा के शब्द है। जबकि गुड़ी, गरदाने, हूठ्यौ, पजरै, आजुकाल्हि, बुरै, पून्यौ, ऐतन मरक, गोरटी औटे, बराठे, जुरू, डयौढी आदि ग्रामीण बोलचाल के शब्द है। जिनका प्रयोग बिहारी सतसई में पर्याप्त मात्रा में मिलता है। बिहारी के काव्य में ब्रज भाषा का उदाहरण इस प्रकार से ळें

कवि बिहारी द्वारा रचित बिहारी सतसई भी अंलकारों से परिपूर्ण है। इसमें कवि बिहारी ने अनेक अंकारों का प्रयोग किया है। राम सागर त्रिपाठी जी ने बिहारी के काव्य में आये अंलकारों का अध्ययन तीन भागों में बांट कर किया है। –

1. सराभिव्यंजना मूलक अंलकार।
2. वस्तुव्यंजना मूलक अंलकार।
3. व्यगयार्थापस्कारक अंलकार।

हमारे मत से बिहारी सतसई के अंलकार सौदर्य का अध्ययन परम्परागत विभाजन के आधार पर किया जात उचित है। परम्परागत आधार पर दो प्रकार से किया जाता है।

(1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

शब्दालंकार : जहां चमत्कार केवल शब्द पर आश्रित हो अर्थात उस शब्द के बदल देने पर जहां चमत्कार नष्ट होता है वहा शब्दालंकार होता है। शब्दालंकारों में प्रायः अनुप्रास, यमक, श्लेषवक्रक्ति और वीप्सा आदि अंलकार आते है।

अर्थालंकार : जहां चमत्कार अर्थ पर अवलम्बित हो अर्थात पयार्यवाची शब्द रख देने पर भी जहा चमत्कार नष्ट नही होता हो वहा अर्थालंकार होता है। अर्थालंकार के अन्तर्गत उपमा, भ्रांति–मान सहोक्ति, अतिश्योक्ति, अन्योक्ति, अपहनुति, काव्यलिंग, विरोधाभास, प्रतीप, आक्षेप, सूक्ष्म आदि अंलकार आते है।

बिहारी सतसई के अन्तर्गत शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों का प्रयोग हुआ है। शब्दालंकारों का प्रयोग अनेक स्थलो पर चमत्कार प्रदर्शन के लिए किया गया है किन्तु अर्थालंकार का सहज प्रयाग भाव सम्प्रेषण के निमित किया गया है। अंकार का प्रयोग काव्य के सौदर्य को बढ़ाने के लिए किया जाता है और यदि अंकार सहज स्वाभातिक प्रक्रिया के अनुसार अनुभूति के सम्प्रेषण के लिए किये जाते है तो उसके काव्य – सौंदर्य और अधिक बढता है, घटता नही है।

अनुप्रास : जहां किसी शब्द या वर्ण की एक से अधिक बार आवृति होती है वहा अनुप्रास अलंकार होता है। अनुप्रास अलंकार के उदाहरण पूर्व कवियों के काव्य में आसानी से मिल जाते है परनतु इसका लालित्य बिहारी में अधिक मिलता है। बिहारी का निम्न दोहा द्रष्टव्य है। अनुप्रास और उसके भेदो के भी बिहारी ने युक्ति संगत प्रस्तुत किए है।

"रस सिंगार–मंजनु किए, कंजनु भजनु दैन।

अंजनु रंजनु हू बिना खंजनु गंजनु नैन।।"

श्लेष : जहां एक शब्द का प्रयोग एक से अधिक अर्थ में होता है वहां श्लेश अंलकार होता है। श्लेष अंलकार में श्लिष्ट पदावली का ही चमत्कार होता है। श्लेष बड़ा ही चमत्कारपूर्ण एवं अर्थागम्भर्य उत्पनन करने वाला अंलकार है, परन्तु इसके प्रयोग करते समय सतर्क रहना पड़ता है। क्योकि किलष्टता इसकी सहगामिनी है। बिहारी सतसई में श्लोक के चमत्कारपूर्ण और अर्थाग–ग्भीर्यपूर्ण उदाहरण मिलते है।

"अजौ तरयौना ही रहयौ श्रुति सेवत इस–रंग।

नाम–वास बेसरि लहयौ बसि मुकुतनु कै संग।।"

यमकः जहां एक ही वर्ण दो या दो से अधिक बार प्रयुक्त हो, परन्तु हर बार उसका भिन्न अर्थ निकले उसे समय अंलकार कहते है। बिहारी ने अपने काव्य में यमक अंलकार का प्रयोग बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

"कनक कनक तै सौ गुनौ मदकता अधिकाय।

उहिं खाऐ बौराई जग इहि पाए बोराई।।

तो पर वारौ उरबसी, सुनि, राधिके सुजार।

तू मोहन कै उरवसी हवै उरबसी अमान।

वक्रोक्ति : जहा सुनने वाला व्यक्ति कहने वाले शब्द के अन्य अर्थ की कल्पना कर ले वहा वक्रक्ति अंलकार होता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि बिहारी प्रेम और श्रृंगार के कवि थे। इसीकारण उनके काव्य में सौदर्य को विशेष स्थान प्रदान हुआ है। इनका यह सौदर्य विधान भावात्मक और कलात्मक दोनों प्रकार का है। इन्होने रमणीयता को कलात्मक रूप में प्रस्तुत करने के लिए जिस भाषा, अंलकति, बिम्ब योजना और छंद कौशल का परिचय दिया है। वह बिहारी के सौदर्य बिधान का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। इस प्रकार बिहारी सतसई एक ऐसी कृति है जिसमें भाव और कला का समानुपातिक योग हुआ है। बिहारी सतसई को पढ़कर कोई भी केवल यदि यह कहता है कि वे चमत्कारवादी कवि है तो निश्चित रूप से उनके साथ न्याय नही करता है।

संदर्भ –सूची

काव्यांग विवेचन– डॉ0 लक्ष्मीनाराण नन्द वाना, प्रमवती शर्मा – 76.

बिहारी रत्नाकर – 57.

बिहारी सतसई – पंडित पदम सिंह शर्मा – 77.

बिहारी सतसई – डॉ हरिचरण शर्मा –

बिहारी सतसई – डॉ हरिचरण शर्मा – 100.

बिहारी सतसई का तुलनात्मक अध्ययन – उर्मिला पाटील – 170.

हिन्दी काव्य में श्रृंगार परम्परा – डॉ0 गणपति चन्द्र गुप्त – 37.

हिन्दी साहित्य कोश – 'भक्ति रस' – डॉ0 जगदीश गुप्त।

डॉ0 किरण कुमारी गुप्तः बिहारी : सम्पादक डॉ0 ओम प्रकाश – 103.

Corresponding Author

Dr. Hemlata Sharma*

Assistant Professor, J. C. College, Assandh, Karnal, Haryana

E-Mail – arora.kips@gmail.com